आर.एन.आई. रजि० नं० HRHIN/2003/10425
डाक पंजीकरण संख्या : RTK/10/2014-16

सृष्टि संवत् 1960853116
विक्रम संवत् 2072
दयानन्दाब्द 192

सेवा में,

महर्षि दयानन्द सरस्वती

E-mail : aryapsharyana@gmail.com
Website : www.apsharyana.org

ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र दूरभाष : 01262-216222, Mob. 8901387993
विदेश में वार्षिक शुल्क : 75 डॉलर विदेश में आजीवन शुल्क : 300 डॉलर सम्पादक : मा० रामपाल आर्य

वर्ष : 12 अंक : 34 रोहतक, 7 फरवरी, 2016 वार्षिक शुल्क : 150/- आजीवन 1500/-

व्याकरण के सूर्य आचार्य बलदेव जी पंचतत्त्व में हुए विलीन

एक महान् सन्त थे पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज

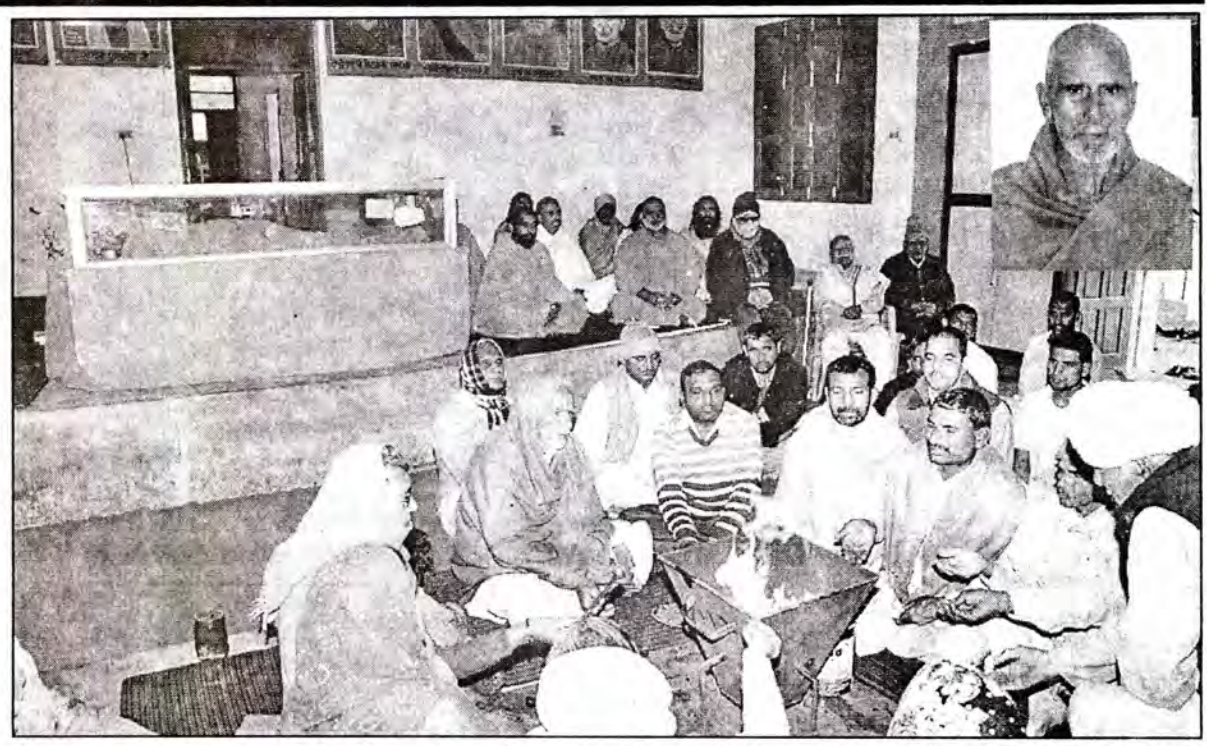

परिवर्तिनि संसारे मृत: को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम्॥

इस परिवर्तनशील संसार में जो भी उत्पन्न हुआ है, वह ईश्वर की व्यवस्था से मृत्यु को अवश्य प्राप्त होता है। यह क्रम सदा से चला आया है, चल रहा है तथा भविष्यत् में भी चलता रहेगा। सामान्य कोटि के व्यक्ति जन्म लेते रहते हैं और मरते रहते हैं, उनसे संसार में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता। किन्तु जिस व्यक्ति के बिछुड़ने से समाज और देश की महान् क्षति हो जाये, ऐसे व्यक्ति का संसार से चले जाना असह्य होता है। ऐसे ही महापुरुषों में आचार्य बलदेव जी महाराज थे। इनके वियोग से कई गुरुकुल, कई आर्य संस्थायें, कई संगठन अनाथवत् हो गये हैं। इनके अभाव की पूर्ति निकट भविष्य में होनी अति कठिन है। वैसे तो किसी भी व्यक्ति के स्थान की पूर्ति कोई भी नहीं कर सकता। परन्तु तपस्वी, त्यागी, विद्वान्, परोपकारी व्यक्ति के अभाव की पूर्ति होनी सर्वथा असम्भव है। अस्तु!

दिनांक 28 जनवरी, 2016 को प्रात: 6.24 पर व्याकरण के सूर्य आचार्य बलदेव जी का स्वर्गवास हो गया। आचार्य बलदेव जी अपने परम शिष्य जयपाल के साथ गुरुकुल कालवा से रात 1.30 बजे दयानन्दमठ रोहतक के लिए चल पड़े। धुंध के कारण प्रात: चार बजे दयानन्दमठ पहुँचे। शौच आदि से निवृत्त होकर 4.15 पर सैर के लिए निकले। ठोकर लगकर गिरे जिससे उनके नाक, ढोडी व आँख पर चोट लगी और बनावटी दांत टूटकर मुंह के तलवे में घाव बनाया जिस कारण उनके तलवे में गहरा घाव हुआ। ज्यादा खून निकलने तथा खून का श्वास नली में चले जाने से देहान्त हो गया। जबकि मैडिकल हॉस्पीटल के डॉक्टरों ने उनका नाम सुनते ही भरसक प्रयास किया। तलवे में टांके लगे परन्तु उनके खून का रिसाव बन्द न होने के कारण डॉक्टरों का प्रयास असफल रहा।

आचार्य बलदेव जी का जन्म हरयाणा प्रान्त के सोनीपत जनपद के सरगथल ग्राम में 19 जनवरी 1931 ई० (माघ प्रतिपदा 1987 वि०) को पिता श्री गूगनसिंह जी के घर में हुआ था। जाट कॉलेज रोहतक से एफ.एस.सी. कक्षा उत्तीर्ण करके बिजली विभाग में नौकरी कर ली। वहाँ इनसे कम शिक्षित सरदार इनके ऊपर नियुक्त था। उसका व्यवहार अशोभनीय था। सम्मानित व्यक्ति के लिए ऐसी विषम परिस्थिति में सर्विस करना कठिन हो जाता है अत: नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। वैदिक धर्म और आर्यसमाज के प्रति आस्था तो पहले से ही थी। इसी कारण सर्विस करते-करते ही गुरुकुल झज्जर में आचार्य भगवान्देव जी के पास आना-जाना प्रारम्भ हो गया। आचार्य जी तो ऐसे श्रद्धालु युवकों को ढूंढ़ते ही रहते थे। फलत: वैराग्यवान् के संस्कार होने से तथा आचार्य जी के सत्संग से घर-बार त्यागकर आर्ष-शिक्षाप्रणाली से शिक्षा प्राप्त करने की भावना दृढ़तर होती चली गई और सब कुछ त्यागकर गुरुकुल झज्जर में पहुँच गये। वहाँ रहते हुए कई वर्ष तक डाकखाने में पोस्टमास्टर का कार्यभार संभाला। जो वेतन इस पद के लिए आता था, उसे भी गुरुकुल में ही प्रदान करते रहते थे। एक बार सरकारी नौकरी छोड़ दी तो पुन: वैतनिक रूप में उसे कभी स्वीकार नहीं किया।

रोहतक। शोक सभा में उपस्थित आर्य समाज के अनुयायी।

क्रमश: पृष्ठ दो पर...

प्रथम पृष्ठ का शेष....

गुरुकुल में रहकर शिक्षा प्राप्त करने में यह कठिनाई आने लगी कि पारिवारिक जनों का आवागमन प्रारम्भ हो गया। अत: आचार्य भगवान्देव जी ने इनको तथा ब्र० इन्द्रदेव (स्वामी इन्द्रवेश) को मैनपुरी जिले के गुरुकुल सिरसागंज में अध्ययन करने हेतु भेज दिया। वहाँ से शिक्षा प्राप्त करके आगे की उच्च शिक्षा हेतु बेरी में आकर पं० राजवीर शास्त्री से व्याकरण-महाभाष्य पढ़कर संस्कृत के उद्भट हो गये और सन् 1962 में गुरुकुल झज्जर में आकर मुख्याध्यापक का पद ग्रहण कर लिया।

अध्यापनकाल में काशिका और महाभाष्य का अध्यापन कराना आपकी विशेष रुचि का परिचायक रहा है। छात्रों को यह छूट थी कि व्याकरणविषयक कोई भी शंका कभी भी निवृत्त कराई जा सकती थी। गुरुकुल में सभी के लिए यह आवश्यक नियम था कि सभी परस्पर संस्कृत में ही वार्तालाप करेंगे। इस नियम का आचार्य बलदेव जी ने कठोरता से पालन किया और इतने दृढ़ रहे कि कभी भूलवश हिन्दी में वाक्य बोल दिया तो उसके प्रायश्चित्तवश उस दिन भोजन भी नहीं करते थे। गुरुकुल के सभी विभागों की व्यवस्था की ओर ध्यान रखते थे। गोशाला के किसी कर्मचारी ने आलस्य-प्रमाद या रुग्णतावश गोबर नहीं उठाया तो आचार्य बलदेव जी उसे उठाने में भी संकोच नहीं करते थे।

शारीरिक तपस्या हेतु एक फुट चौड़ी मुंडेर पर गर्मी में रात को सोते थे। सर्दी में भी रजाई का प्रयोग नहीं किया, केवल एक सामान्य-सा कम्बल ओढ़ लेते थे। कई बार तो सर्दी में भी केवल एक चादर ही ओढे रहते थे। कुरता-चप्पल, जूता, खड़ाऊँ का भी प्रयोग नहीं किया। भोजन सर्वथा सादा करते थे, जैसे नमक, मिर्च, मसाले और मीठा तक का सेवन नहीं करते थे। इस प्रकार 1962 से मई 1971 तक लगातार गुरुकुल की सब प्रकार की सेवा करते रहे हैं। अप्रैल-मई की भयंकर तपन में भी नंगे पैर रहकर ग्रामों में घूम-घूमकर गुरुकुल हेतु अन्न-संग्रह किया करते थे। उत्सव आदि सार्वजनिक कार्यों में भी कभी भी आगे आकर सम्मान प्राप्त करने की भावना प्रदर्शित नहीं की। स्वयं को सदा सेवक के रूप में प्रदर्शित करते रहे हैं।

कुछ असामाजिक तत्त्वों की कुटिलता के कारण गुरुकुल झज्जर को छोड़कर गुरुकुल कालवा में पहुँच गये। वहाँ रहकर भी सैकड़ों छात्रों को पढ़ाकर विद्वान् बनाया। गुरुकुल झज्जर के 9 वर्ष के निवासकाल में जिन विशेष विद्वानों को तैयार किया, उनकी संक्षिप्त नामावली इस प्रकार है—

डॉ० धर्मवीर अजमेर प्रधान परोपकारिणी सभा, डॉ० योगानन्द शास्त्री, मन्त्री (दिल्ली सरकार), डॉ० सुरेन्द्र कुमार कुलपति गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरद्वार, डॉ० रामवीर शास्त्री फरीदाबाद, डॉ० रघुवीर वेदालंकार दिल्ली, आचार्य दयानन्द

क्रमशः पृष्ठ आठ पर...

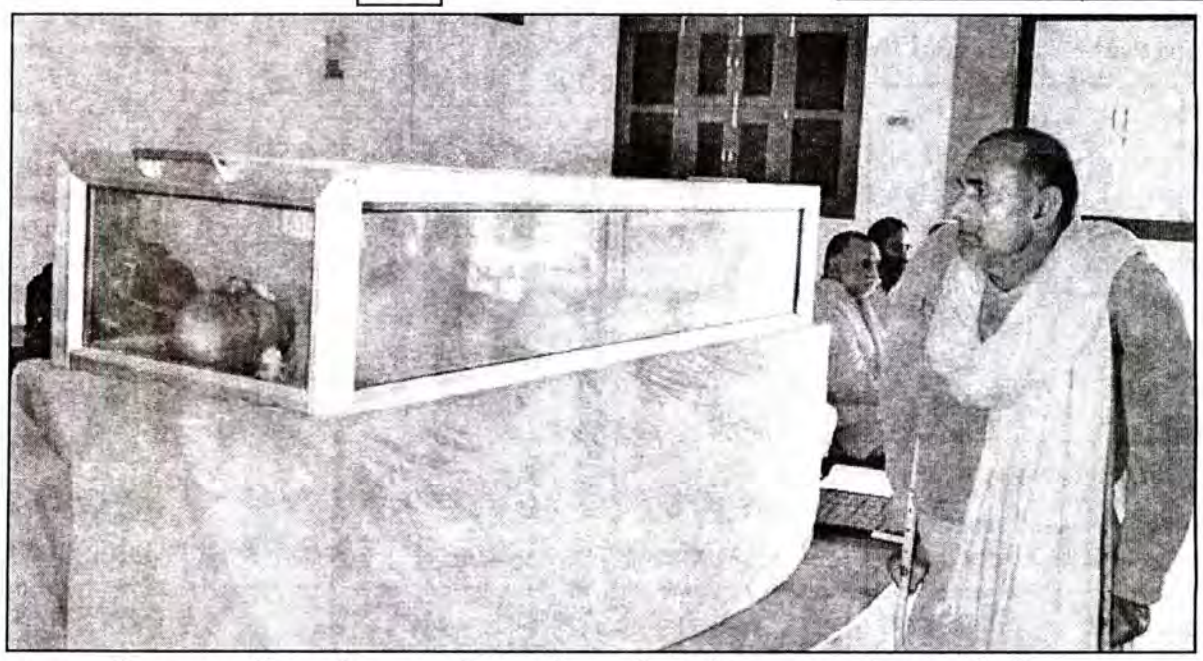

रोहतक। पार्थिव शरीर का अन्तिम दर्शन करते लाढौत गुरुकुल के आचार्य हरिदत्त।

रोहतक। डीसी डीके बेहेरा, एडीसी अमित खत्री ने भी दयानन्दमठ पहुंचकर शोक जताया

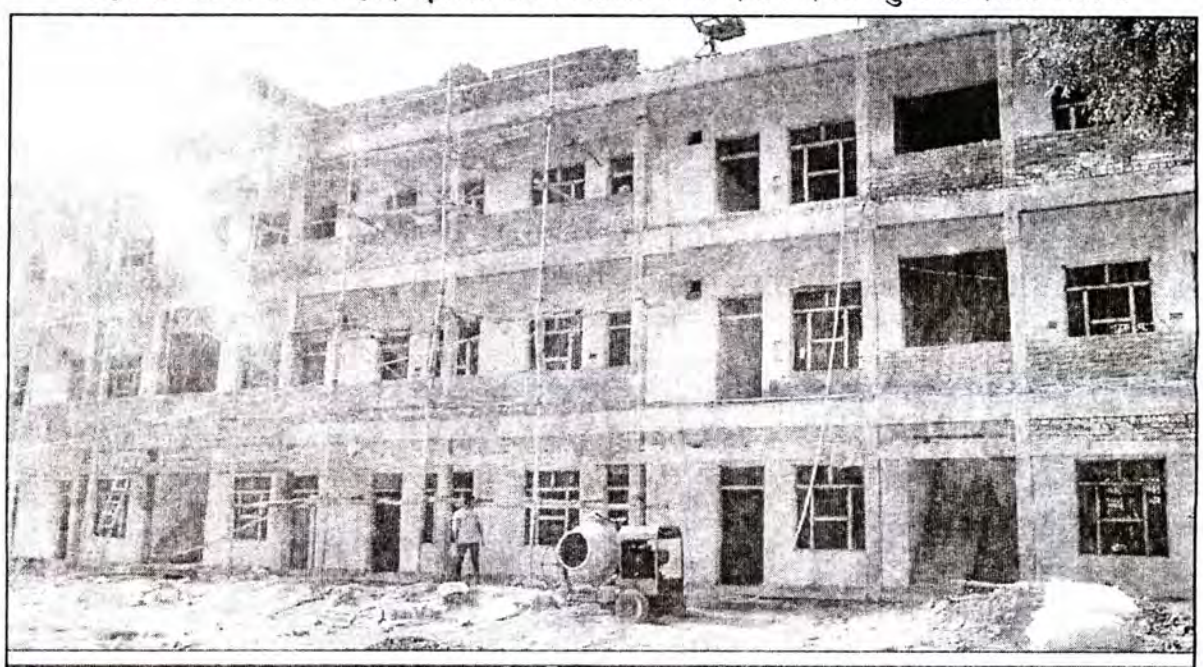

अब नए भवन में तैयार होंगे आर्य समाजी

रोहतक दयानन्द मठ परिसर में बहुमंजिला भवन तैयार किया जा रहा है, जहाँ से आर्यसमाज के नए उपदेशक तैयार किये जायेंगे। इस भवन का शिलान्यास पत्थर आचार्य बलदेव जी ने जुलाई 2015 में रखा था। यहाँ 24 कमरे तैयार किये जा रहे हैं। आठ कमरे संन्यासियों व आठ कमरे उपदेशकों के लिए रहेंगे। वहीं, शेष आठ कमरे छात्रावास के तौर पर इस्तेमाल होंगे। भवन के इस मार्च 2016 तक तैयार होने के पूरे आसार हैं। इस भवन का नाम आचार्य बलदेव भवन रखा गया।

गुरुकुलीय परम्परा के संवाहक आचार्य बलदेव जी महाराज

❑ धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर-प्रदेश

आज से 50 वर्ष पूर्व गुरुकुल झज्जर की स्वर्णजयन्ती पर वर्ष 1966 के फरवरी मास में मझे सर्वप्रथम इनके दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था उस समय मेरी आयु मात्र 13 वर्ष थी लेकिन मुझे सब दृश्य उपस्थित हैं, युवा सम्मेलन मुझे अधिक याद है, व्यायाम प्रदर्शन का भी पूरा चित्र चित्त में सुरक्षित है। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी उस समय आचार्य भगवान्देव जी के रूप से प्रसिद्ध थे तब आपने ब्र० बलदेव जी और ब्र० इन्द्रदेव (इन्द्रवेश) जी की भूरि-भूरि प्रशंसा की थी। स्वामी समर्पणानन्द जी (पं० बुद्धदेव विद्यालंकार) ने आचार्य जी की प्रशंसा करते हुए उन्हें अपना आशीर्वाद दिया था तभी से पूरे देश में आर्यजगत् में ब्र० बलदेव जी आचार्य की प्रशंसारूपी यश का विस्तार हुआ था उसी के चार मास बाद गुरुकुल झज्जर में 15 दिन व्यायाम सीखने के माध्यम से रहने का सौभाग्य मिला था और उसके पश्चात् कुछ समय तक पढ़ने का भी सौभाग्य मिला है। 1968 में जब मैं पढ़ने के लिए गुरुकुल झज्जर में आया था उस समय आचार्य बलदेव जी ही प्रधानाचार्य के रूप में प्रतिष्ठित थे। आपकी कर्मठता-तपस्या-शालीनता-सौम्यता-विद्वत्ता के आगे सभी नतमस्तक रहते थे। अन्नसंग्रह का कार्य गुरुकुलों के लिए सबसे कठिन परीक्षा होती है। आचार्य बलदेव जी के लिए यह सर्वोत्तम कार्य के रूप में सिद्ध हुआ। आपने पिछले वर्षों की अपेक्षा दोगुनी गेहूं संग्रह करके पूज्य आचार्य जी के मुख से भी प्रशंसा कराने का आपको सौभाग्य मिला। आप मितभाषी विद्वान् के रूप में प्रसिद्ध हुए। अष्टाध्यायी व्याकरण महाभाष्य जैसा कठिन ग्रन्थ आपको सरल रूप से पढ़ाने का अभ्यास हो गया था उसका मूल कारण था हमारे पूज्यपाद गुरुकुल सिरसागंज मैनपुरी के आचार्य गुरुदेव महात्मा देवस्वामी जी महाराज, आप उन्हीं के चरणों में बैठकर विद्वान् बने। वे गुरुकुल एटा के आचार्य जी से पढ़कर इस योग्य बने कि व्याकरण काशिका और महाभाष्य को सरलतम तरीके से शिष्यों को पढ़ाया करते थे। वहाँ 2 वर्ष तक आचार्य जी ने व्याकरण का अध्ययन किया।

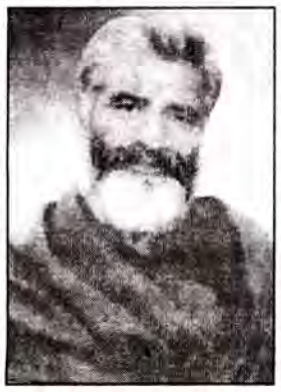

गुरुकुल झज्जर में आकर उसका परिमार्जन किया और स्वामी विवेकानन्द जी गुरुकुल प्रभात आश्रम मेरठ जैसे योगी तपस्वी साधुओं को भी आपने विद्वान् बनाया। आपसे एक बार में पढ़कर छात्र संतुष्ट हो जाया करते थे। मेरे ऊपर आपका स्नेह और आशीर्वाद सदैव रहा। आप संकल्प के धनी थे गुरुकुल झज्जर से गुरुकुल कालवा तक की यात्रा भी संघर्ष-संकल्प और तपस्या तथा पुरुषार्थ से भरा इतिहास है जो सदैव आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। गुरुकुल कालवा में भ्राता वेदपाल जी का तप पुकार रहा था और आप आचार्य हरिदेव जी (स्वामी प्रणवानन्द जी), योगेन्द्र पुरुषार्थी (दिव्यानन्द जी), विक्रम कुमार विवेकी, धर्मदेव मनीषी, आनन्द कुमार एवं यज्ञानन्द आदि-आदि साथी एवं शिष्यों के साथ कालवा आए थे और अपने तप से पूरे क्षेत्रवासियों की श्रद्धा के केन्द्रबिन्दु बने थे। गोरक्षा के लिए आपका संघर्ष पूरे आर्यजगत् को याद है। सुन्दर गोशाला निर्माण हेतु तत्कालीन मन्त्री श्रीमती मेनका गांधी जी ने आपको अपूर्व सहयोग प्रदान किया था। उसके पश्चात् आप आर्यसमाज की राजनीति में भी सक्रिय हुए। आपने अपने गुरुकुल में बड़े छात्रों का ही प्रवेश निश्चित किया था साथ ही ऐसे छात्रों को प्रविष्ट किया गया जो ब्रह्मचर्य से सीधे संन्यासी अथवा साधक बनकर समाजसेवा का व्रत लेंगे। जैसे म० बुद्ध के समय में भिक्षुओं को दीक्षित किया जाता था। उसी प्रकार का स्वप्न आपने देखा और उसे साकार करने का पुरुषार्थ किया जिसका परिणाम स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण जी, आचार्य नरेश जी, आचार्य राजेन्द्र जी, स्वामी धर्मदेव जी, स्वामी महेश योगी जी जैसी बड़ी शृंखला है जो आज पूरे आर्यजगत् में सेवारत होकर आचार्य जी की वंश परम्परा को बढ़ा रहे हैं। आचार्य बलदेव जी एक मिशनरी के रूप में विख्यात हुए। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की परम्परा आपकी अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। ब्र० राजसिंह आचार्य भी आप द्वारा ही दीक्षित शिष्य रहे हैं। उनसे मिलकर पूरे भारत का भ्रमण किया। कलकत्ता में आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल के कार्यालय भवन का उद्घाटन किया। प्रत्येक प्रदेश में प्रतिनिधि सभाओं का निर्माण एवं संचालन किया। अन्य देशों में भी आर्य महासम्मेलनों का आयोजन आपके कार्यकाल में ही हुआ है। आपने दिल्ली में दो बार तथा प्रान्तीय स्तर पर भी आपने संगठन को सुदृढ़ किया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष पद की शोभा बढ़ाई। सन्त रामपाल ने जब हरयाणा में आश्रम बनाकर महर्षि दयानन्द सरस्वती और आर्यसमाज के विरुद्ध विषवमन शुरू किया तब आपने उसके विरोध में जनमानस को तैयार किया और आन्दोलन किया, सड़कें जाम कीं, उसका परिणाम यह हुआ कि उसे गिरफ्तार किया गया आज वह जेल की हवा खा रहा है। यह आचार्य जी की तपस्या के कारण ही संभव हो सका है।

इसी प्रकार गोरक्षा के लिए आपने संघर्ष किया सत्याग्रह किया और बूचड़खाने तुड़वाये। गोरक्षा दल बनाया, हरयाणा गोशाला संघ के आप अध्यक्ष बने और पूरे प्रदेश की गोशालाओं के लिए सरकार से अनुदान तथा सहायता दिलवाई। महर्षि दयानन्द सरस्वती की प्रतिमा बुढाना मु०नगर (उ०प्र०) चौक बनवाकर उसका अनावरण किया। आपके तप और त्याग के आगे सभी नतमस्तक रहते थे। एक समय था जब ब्रह्मचारी बलदेव, ब्र० इन्द्रदेव (इन्द्रवेश) जी की जोड़ी युवकों के लिए हृदय सम्राट के रूप में याद की जाती थी फिर राजनीति और धर्मनीति पृथक्-पृथक् अपना वर्चस्व बनाने लगी और एक समय आया जब आचार्य बलदेव जी भी आर्यसमाज की राजनीति के पुरोधा बनकर शिरोमणि सभा के अध्यक्ष पद पर शोभायमान रहे। उधर ब्रह्मचारी इन्द्रदेव जी संन्यासी बने और राजनीति में सांसद बने परन्तु आर्यसमाज की राजनीति में उनकी तपस्या कम रह गई और अध्यक्ष पद पर जाते-जाते मुक्तावस्था को प्राप्त हो गए। ज्ञान और तप का संघर्ष चलता आया है सदैव तपस्या की ही विजय हुई है। आचार्य जी तपोमूर्ति थे, वेद-व्याकरण के विद्वान् थे, साधक और योगी थे। अनेक विषय में आज पूरा आर्यसमाज सुपरिचित है। गुरुकुलीय परम्परा के वे संवाहक थे जहाँ भी गुरुकुल होता वहीं जाते और ब्रह्मचारियों को प्रेरणा प्रदान करते थे। गुरुकुल सिरसागंज के प्रथम स्नातक थे गुरुकुल झज्जर के प्रथम आचार्य थे फिर तो पूरे देश में आप गुरुकुलीय परम्परा संचालित करने के लिए नैष्ठिक दीक्षा लेकर आचार्य तैयार करते थे। उनका सपना था कि प्रत्येक गुरुकुल में आचार्य, ब्रह्मचारी अथवा संन्यासी हो, तपस्वी हो तभी 'अग्निना अग्निः समिध्यते' अपनी ज्ञानाग्नि से प्रदीप्त कर सकते हैं। आपने पूज्यपाद गुरुदेव म० देवस्वामी जी और पूज्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के स्वप्न को साकार किया है। गुरुकुल झज्जर आज भी आपके आशीर्वाद से अपने उद्देश्यपूर्ति हेतु प्रयासरत है उसकी शताब्दी मार्च में हो रही है। इसे भी विडम्बना ही कहा जायेगा कि मात्र एक-डेढ़ मास पूर्व ही आप हमें छोड़कर चले गए क्या ही अच्छा होता यदि आपका हमें शताब्दी पर आशीर्वाद मिल पाता। इसे प्रभु इच्छा बलीयसि कहकर ही सन्तोष करना पड़ेगा।

आचार्य बलदेव जी हरयाणा के लिए एक वरदान बनकर आए थे। आपकी एक आवाज पर हजारों लोग सहज भाव से एकत्रित हो जाया करते थे। एक बार स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने स्वयं ही कहा था कि आचार्य बलदेव जी की तपस्या मेरे से ऊपर है। 'सच्चे गुरु के सच्चे पारखी' पुस्तक में आपकी दीक्षा का पूरा विवरण आता है उस समय का दृश्य ही बड़ा मनोरम है। यज्ञशाला में सात्विक वातावरण है, गुरुकुल में आप जब किसी कार्य से आये थे (शायद बिजली विभाग में आप कार्यरत थे) उस सात्त्विक वातावरण से आप इतने प्रभावित हुए थे कि आपने अपने जीवन की धारा को ही बदल दिया था गृहस्थ आश्रम छोड़कर ब्रह्मचर्य की साधना को अपनाया था और दूसरे साथियों को स्वामी जी की प्रेरणा से तैयार किया था। तभी से आपका प्रयास आर्यसमाज के कार्य को सुदृढ़ कर रहा था। गत वर्ष आपका स्वास्थ्य कमजोर हो गया था तब आपके दर्शनों के लिए स्वामी प्रणवानन्द जी के साथ दिल्ली अस्पताल गया था और आपसे आशीर्वाद लिया था फिर गुरुकुल झज्जर के सम्मेलन पर मिला था। सोच रहा था कि शताब्दी पर जाकर फिर दर्शन करूँगा। लेकिन आज प्रातः की सूचना ने सभी कुलवासियों को शोकाकुल कर दिया। शान्तियज्ञ किया और सभी ने मौन रहकर अपनी श्रद्धाजलि प्रदान की। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा उ०प्र० लखनऊ एवं गुरुकुल पूठ-गुरुकुल ततारपुर, एवं गुरुकुल सिरसागंज की ओर से अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

संपर्क-संचालक, गुरुकुल पूठ,
गढ़मुक्तेश्वर-हापुड़ (उत्तर-प्रदेश)
मोबाइल नं० 9837402192

राज्यपाल ने किया नमन

मुखाग्नि की तैयारी

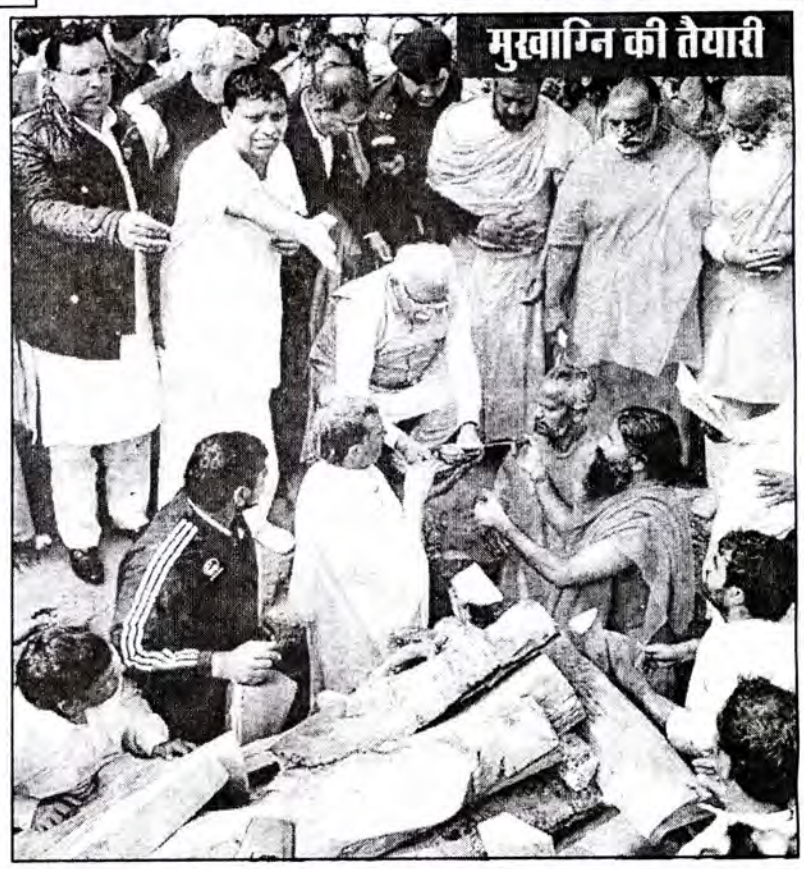

ओमप्रकाश बेरी ने दी श्रद्धांजलि

अभय चौटाला व आचार्य बालकृष्ण ने याद किए

पूर्व सीएम हुड्डा भी पहुंचे

हरिभूमि अखबार में पुरोधा के बारे में पढ़ते लोग

महिलाओं ने किए वैदिक विद्वान के अंतिम दर्शन

पुलिस-प्रशासनिक अधिकारी रहे तैनात

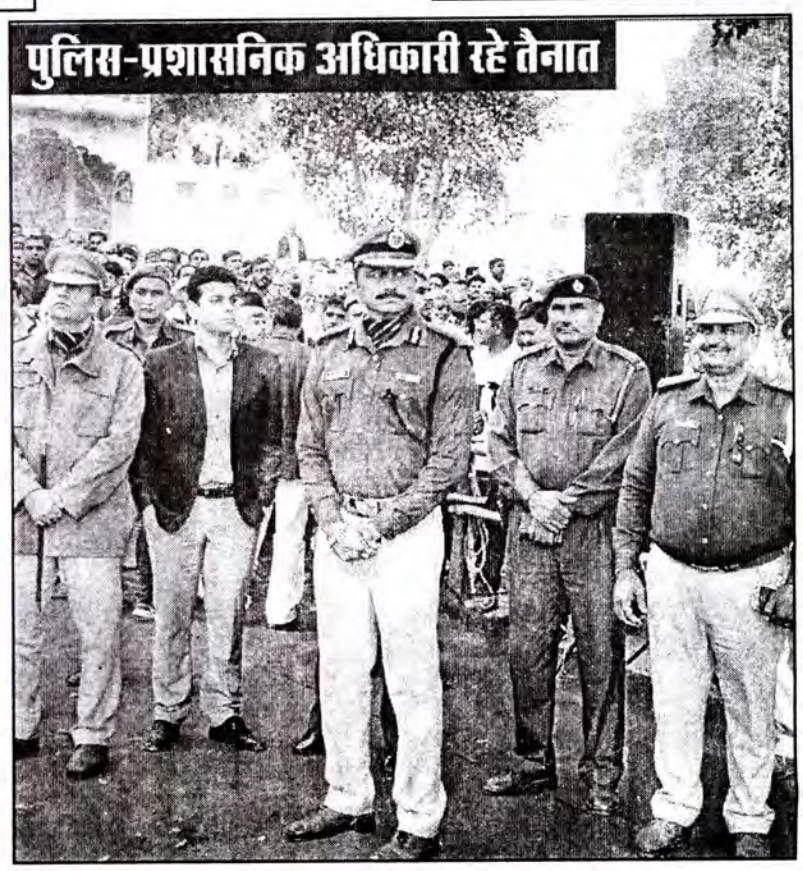

अंतिम दर्शन के लिए कतार

दृढ़-संकल्प

गतांक से आगे....

वेद में अनेकत्र ऐसा निर्देश किया गया है कि व्यक्ति शुभ-कर्मों कर्त्तव्य कर्मों को करने का संकल्प धारण करे क्योंकि जो संकल्प से रहित है वह मनुष्य ही नहीं है, बल्कि पशुवत् है। पशुओं के जीवन में किसी कार्य को करने का न कोई संकल्प होता है, न कोई नीति-नियम होता है।

जिसने किसी कार्य को करने का मन में संकल्प कर लिया है चाहे वह शारीरिक हो या आत्मिक या सामाजिक या फिर राष्ट्रीय उसके लिए इस संसार में कोई भी कार्य कठिन नहीं है और बिना व्रत के छोटा-सा कार्य भी सरल नहीं होता है। यद्यपि किसी भी क्षेत्र में उन्नति करने हेतु अनेक संसाधनों की अपेक्षा होती है। किन्तु उन सब में प्राथमिक तथा मुख्य साधन के रूप में दृढ़ संकल्प होना चाहिए। जब कोई दृढ़ संकल्प कर लेता है तो उसको उस कार्य को पूरा करने के लिए अन्यों से अधिकार भी मिलते हैं और अधिकार को प्राप्त करके जो व्यक्ति अपने पूर्ण पुरुषार्थ, तपस्या, त्यागपूर्वक परिश्रम करता है तो उसे दक्षिणा मिलती है,

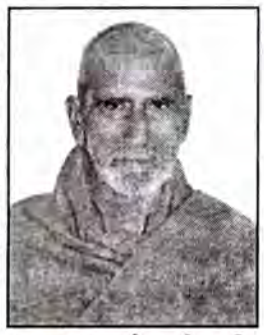

पूज्य आचार्य बलदेव जी

लोगों से सम्मान मिलता है, पुरस्कार मिलते हैं, अन्य लोग भी उसका समर्थन करते हैं, उसके साथ हो जाते हैं, उसकी सर्वत्र जय-जयकार होती है, उसकी सभी प्रशंसा करते हैं, गीत गाते हैं, पूजा-स्तुति करते हैं।

जब लोगों से, समाज से, जन-जन से, उसे इस प्रकार का सम्मान मिलता है तो अपने कार्यों के प्रति उसकी श्रद्धा, निष्ठा, प्रेम, विश्वास और अधिक बढ़ जाता है और व्यक्ति अपने उस संकल्पित कार्य को और अधिक पुरुषार्थ के साथ, तपस्या के साथ करता है। जिस कार्य के प्रति जितनी अधिक श्रद्धा होती है वह उस कार्य को उतनी ही अधिक तीव्रता से, दक्षता से, तन्मयता से, एकाग्रता से, रुचिपूर्वक करता है। इसका परिणाम यह होता है कि वह उस लक्ष्य को प्राप्त कर लेता है और सफल हो जाता है। लक्ष्य चाहे छोटा हो या बड़ा उसे प्राप्त करने के लिए यही प्रक्रिया है।

हे व्रतों के के स्वामी परमपिता! प्रत्येक शुभ कार्य के लिए हम मन में दृढ़ता से संकल्प धारण करें ऐसी प्रेरणा शीघ्र ही, आज ही प्रदान करो। उस संकल्प को हम कदापि न भूलें, न छोड़ें, न तोड़ें। आपके द्वारा सतत उत्साह, बल, साहस, पराक्रम, प्रेरणा, ज्ञान-विज्ञान प्राप्त करके, बिना रुके, बिना झुके, बिना भटके, बिना अटके सतत चलते रहें, विश्राम तभी करें जब लक्ष्य प्राप्त हो जाये।—**आचार्य बलदेव**

तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी को श्रद्धासुमन

❑ **स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, संरक्षक-आर्ष गुरुकुल कालवा**

मैं आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में 16 अप्रैल 1958 ईस्वी में प्रविष्ट हुआ तब श्रद्धेय आचार्य बलदेव जी महाराज गुरुकुल झज्जर में छात्राध्यक्ष का काम कर रहे थे और स्वयं अष्टाध्यायी सूत्रपाठ कण्ठस्थ करते एवं ब्रह्मचारियों को स्मरण करने के लिए प्रेरणा देते थे। सन् 1958 में ही कुछ मास पश्चात् संस्कृत व्याकरण के ग्रन्थ अष्टाध्यायी प्रथमावृत्ति, काशिका, महाभाष्यादि के अध्ययनार्थ उत्तरप्रदेश के मैनपुरी जिले के गुरुकुल सिरसागंज और गुरुकुल नौनेर में पहुंच गये वहाँ व्याकरण महाभाष्यादि का तीन वर्षों में अध्ययन किया। पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज के आदेशानुसार गुरुकुल झज्जर में अध्यापनार्थ आ गये और आपको गुरुकुल का पूर्ण अधिकार सौंप दिया। स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज भी आपके साथ थे। आपने गुरुकुल झज्जर में पठन-पाठन, अन्नसंग्रह, गोसेवा आदि के लिए घोर तपस्या की। आप गुरुकुल में मुख्याध्यापक एवं अधिष्ठाता पद पर लगभग दस वर्ष रहे। स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने छः वर्ष अध्यापनादि का कार्य करके सामाजिक तथा राजनैतिक गतिविधियों में भाग लिया और संसद सदस्य बने।

आचार्य बलदेव जी महाराज ने सन् 1971 मई में आर्ष महाविद्यालय गुरुकुल कालवा (जीन्द) को संभाल लिया और अपने उद्देश्यानुसार नैष्ठिक ब्रह्मचारी विद्वान् साधु महात्मा तैयार किये और गुरुकुल के समीप ही राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली एवं मेडिकल की स्थापना की। आप आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा और हरयाणा गोशाला संघ के प्रधान एवं संरक्षक रहे। आपने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान का भी कार्य किया। ऐसे राष्ट्रीय पुरुष तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी महाराज को मैं अपने श्रद्धासुमन अर्पित करता हूँ। धन्यवाद।

निमन्त्रण-पत्र

सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत (हरि०) के तत्त्वावधान में नि:शुल्क क्रियात्मक यज्ञ प्रशिक्षण शिविर दिनांक 21-22 फरवरी 2016 (रविवार, सोमवार) को समय प्रात: 7.30 से 9.30 बजे व सायं 3.00 से 5.00 बजे सी.ए.वी. हाईस्कूल, मण्डी रोड, हिसार में किया जा रहा है। इस शिविर में प्रशिक्षक-पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी एम.कॉम., दर्शनाचार्य वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात)।
आयोजक-महात्मा वेदपाल आर्य, अध्यक्ष-न्यास, मो० 94161-22289
संयोजक-महात्मा आनन्द मुनि, हिसार मो० 9034444898
यज्ञ व्यवस्था-गुरुकुल कुरुक्षेत्र के ब्रह्मचारियों द्वारा किया जाएगा।

आवश्यक सूचना

सभी आर्यजनों को सूचित किया जाता है कि आर्यसमाज के तपोनिष्ठ पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज का 28.01.2016 को दयानन्दमठ रोहतक में स्वर्गवास हो गया है। सभी आर्यजनों से निवेदन है कि पूज्य आचार्य जी से सम्बन्धित लेख, कविता, सीडी एवं डीवीडी आदि जो भी हों, वह 'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्दमठ रोहतक' के पते पर भेजें।

पूज्य आचार्य जी सम्बन्धित लेखन सामग्री इकट्ठी करके शीघ्र ही विशेषांक निकालने की योजना है। आशा है आप सब हमें सहयोग प्रदान करेंगे।

—व्यवस्थापक

मै० कुलवन्त पिक्कल स्टोर, शाप नं० 115, मार्किट नं० 1, एन.आई.टी., फरीदाबाद-121001 (हरि०)
मै० मेवाराम हंसराज, किराना मर्चेन्ट, रेलवे रोड, रिवाड़ी-123401 (हरि०)
मै० मोहनसिंह अवतारसिंह, पुरानी मण्डी, करनाल-132001 (हरि०)
मै० ओम्प्रकाश सुरिन्द्र कुमार, गुड़ मण्डी, पानीपत-132103 (हरि०)
मै० परमानन्द साईं दित्तामल, रेलवे रोड, रोहतक-124001 (हरि०)
मै० राजाराम रिक्खीराम, पुरानी अनाज मण्डी, कैथल-132027 (हरि०)

आर्य-संसार

ऋषिकुल गोशाला नीमड़ीवाली का उत्सव सम्पन्न

दिनांक 14.1.2016 को मकर संक्रान्ति पर्व पर ऋषिकुल गोशाला नीमड़ीवाली भिवानी का उत्सव मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी दयानन्द गिरि, पं० भरतलाल शास्त्री, आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी, प्रो. भूपसिंह आर्य, प्रो. सत्यपाल आर्य, बहन सुनीति शास्त्री, प्रिं. शकुन्तला आर्या आदि ने अपने विचार गोरक्षा व मक्रान्ति संक्रान्ति पर रखे। दयानन्द तेवतिया के भजन हुए तथा मंच का संचालन ज्ञानेन्द्र शास्त्री ने किया। कालेज के छात्रों का नाटक व भजनों का कार्यक्रम सराहनीय रहा। शेरसिंह आर्य ने सबका धन्यवाद किया।

-वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, नलवा (हिसार)

जिला हिसार में वेदप्रचार की धूम

दिनांक 23.1.2016 को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सभा की अध्यक्षता महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने की। विद्यालय के प्राचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने आध्यात्मिक सारगर्भित विचार रखे। ब्र. अजमेश आर्य, ब्र. अमित आर्य, ब्र. कृष्णकुमार, ब्र. तपन आर्य, ब्र. नरोत्तम कुमार आर्य आदि ने कविता, श्लोक, वेदमंत्र तथा ईश्वरभक्ति के भजन रखे। स्नेही जी ने नेताजी के जीवन पर प्रकाश डाला।

सभा का आयोजन

दिनांक 24.1.2016 को आर्यसमाज दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में महात्मा आनन्द स्वामी सभागार में वेदप्रचार मण्डल के बौद्धिक अध्यक्ष डॉ. प्रमोद योगार्थी ने सभा की अध्यक्षता की। मुख्य वक्ता के रूप में श्री महेन्द्रसिंह मलिक महामन्त्री आर्यसमाज 16-17 सैक्टर हिसार थे। मंच का संचालन वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने किया। आर.एस. चुघ, चिरंजीलाल आर्य व ब्र. तुषार आर्य ने ईश्वरभक्ति के भजन रखे। महामन्त्री ने ईश्वर, जीव, प्रकृति की सुन्दर व्याख्या की। डॉ. प्रमोद योगार्थी ने योग व संस्कारों के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

इस अवसर पर शहर के गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मंत्री प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा श्री सत्यपाल आर्य, ऐलावादी एडवोकेट, युद्धवीरसिंह आर्य, निहालसिंह पूर्व इंस्पेक्टर, वेदपाल आर्य, पानीपत, प्रेम गाबा आदि थे। वेदप्रचार मण्डल के सदस्यों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

गणतंत्र दिवस समारोह सम्पन्न

गुरुकुल आर्यनगर हिसार में गणतंत्र दिवस बड़े हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। प्रात: 9 बजे महात्मा वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही ने ध्वजारोहरण किया। तत्पश्चात् हॉल में ब्र. दीपकुमार की अध्यक्षता में सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अत्तरसिंह स्नेही मुख्य अतिथि थे। गुरुकुल के विद्यार्थियों ने नेताजी व लाला लाजपतराय पर विचार तथा भजनों का कार्यक्रम किया। गुरुकुल के कुलपति आचार्य रामस्वरूप शास्त्री ने 67वें गणतन्त्र दिवस पर विस्तार से प्रकाश डाला। महाशय शार्दूल (लितानी) ने देशभक्ति के भजन प्रस्तुत किये। मंच का संचालन गुरुकुल के आचार्य संजीव कुमार ने किया। वेदप्रचार मण्डल के संरक्षक अत्तरसिंह स्नेही ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, लाला लाजपतराय, पण्डित रामप्रसाद बिस्मिलल आदि शहीदों के जीवन पर प्रकाश डाला। अध्यापक रणधीर सिंह आर्य, राधाकृष्ण आर्य ने भी विचार रखे। ब्र. दीपकुमार आर्य ने बच्चों को अनुशासन व चरित्र का पाठ पढ़ाया। अपनी ओर से 1100 रु० गुरुकुल के लिए दिए और बच्चों को लड्डू बांटे।

प्रवेश सूचना

आर्यसमाज के प्रसिद्ध योगनिष्ठ संन्यासी पूज्य स्वामी सत्यपति जी महाराज द्वारा संचालित दर्शन योग महाविद्यालय, आर्यवन, रोजड़ (गुजरात) की द्वितीय शाखा-दर्शन योग महाविद्यालय, ग्राम-सुन्दरपुर, जिला रोहतक (हरयाणा) का शुभारम्भ 1 नवम्बर 2015 को हो चुका है, जिसमें योग-सांख्य-वैशेषिक-न्याय, एकादशोपनिषद् सहित वेदान्तदर्शन का अध्यापन, वैदिक योग साधना प्रशिक्षण का विशेष सत्र 5 मार्च 2016 से स्वामी आशुतोष परिव्राजक, शिष्य पूज्य स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक रोजड़ (गुजरात) द्वारा प्रारम्भ किया जा रहा है। दर्शन शास्त्र और योगविद्या के इच्छुक ब्रह्मचारी दर्शन योग महाविद्यालय, ग्राम-सुन्दरपुर, जिला रोहतक (हरयाणा) के पते पर पत्राचार व फोन द्वारा सम्पर्क करें। सधन्यवाद।

—निगम मुनि, प्रबन्धक, दर्शन योग महाविद्यालय, ग्राम-सुन्दरपुर, जिला रोहतक (हरयाणा) मोबा० 9355674547, 7027026175

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय में गणतंत्र दिवस मनाया गया

विद्यालय के आचार्य डॉ. प्रमोद योगार्थी ने प्रात: 9 बजे ध्वजारोहण किया। श्री प्रमोद लाम्बा मंत्री एवं आचार्य रामसुफल शास्त्री ने देशभक्ति की शिक्षा देते हुए गणतन्त्र दिवस की बधाई दी। विद्यार्थियों के देशभक्ति के भजन हुए। आचार्य जी ने गणतन्त्र दिवस के महत्त्व पर प्रकाश डाला तथा शहीदों को याद किया। विद्यार्थियों को लड्डू बांटे गए।

—रामकुमार आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल हिसार

नवनिर्वाचित सरपंच 'स्वच्छतायुक्त ग्राम संकल्प' महायज्ञ करवाया

गाँव पलड़ी जिला पानीपत के नवनिर्वाचित सरपंच श्री नरेशकुमार सहरावत ने निर्वाचित पंचों के साथ गांव के पूर्ण सहयोग से गांव स्वच्छ व नशामुक्त बनाने के लिए 24 से 26 जनवरी तक 'त्रिदिवसीय संकल्प महायज्ञ' संपूर्ण गांव निवासियों के साथ मिलकर सम्पन्न किया। हरिद्वार से पधारे योगाचार्य पं० अरविन्द शास्त्री, वेदपाठी पं० प्रदीप शास्त्री तथा ब्रह्मचारी अंकुर व ब्र. सागर ने तीनों दिन सामवेद के मंत्रों के साथ पंचमहायज्ञ कराए। सम्पूर्ण कार्यक्रम में बिजेन्द्र सिंह तथा गांव के बुजुर्गों, माता-बहनों व युवाओं की भरपूर भागीदारी रही। महायज्ञ से पहले दिन पूरी पंचायत के साथ ग्रामीणों ने गांव की प्रत्येक गली की सफाई भी की। आसपास के क्षेत्र में कार्यक्रम की सराहना मिल रही है।

—जगदीशचन्द्र शास्त्री, पानीपत 9466565162

शोक-समाचार

बड़े दु:ख के साथ सूचित किया जाता है कि चौ० युद्धवीरसिंह आर्य की बहन बिमला आर्या जो गांव मायड जिला हिसार में ब्याही थी उनका 52 वर्ष की आयु में देहान्त 13.1.2016 को वेदांता हस्पताल गुड़गांव में हुआ। अन्तिम संस्कार गांव जाण्डवाला बागड़ जिला फतेहाबाद में वैदिक रीति से आचार्य मानसिंह पाठक ने कराया। दिनांक 18.1.2016 को जाण्डवाला में शान्तियज्ञ के बाद श्रद्धांजलि समारोह किया गया। यज्ञ आचार्य पं० रामस्वरूप शास्त्री द्वारा किया गया। बहन यज्ञप्रेमी मृदुभाषी व अतिथि सेविका थी वह अपने पीछे एक लड़का व एक लड़की छोड़ गई। श्रद्धांजलि समारोह में स्वामी सर्वदानन्द जी, वानप्रस्थ अत्तरसिंह स्नेही, पं० रामस्वरूप शास्त्री, रामकुमार आर्य आदि ने श्रद्धांजलि दी। युद्धवीर आर्य ने सबका धन्यवाद किया। यज्ञ पर सैकड़ों नर-नारियों ने भाग लिया।

—बलवीरसिंह आर्य, प्रधान आर्यसमाज जाण्डवाला जिला फतेहाबाद

॥ ओ३म्॥

गुरुकुल झज्जर का

स्थापना शताब्दी समारोह

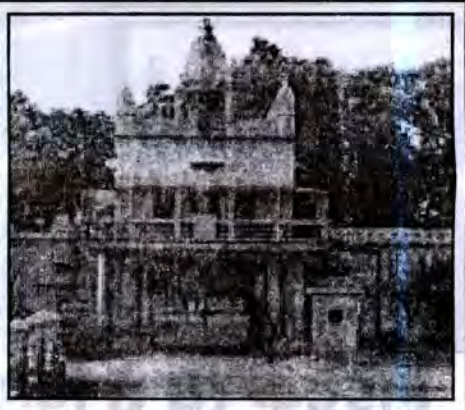

सभी आर्यजनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि गुरुकुल झज्जर का शताब्दी समारोह तपोनिष्ठ आचार्य बलदेव जी की अध्यक्षता में बड़ी धूमधाम से 12, 13 मार्च 2016 (शनिवार, रविवार) को मनाया जा रहा है।

इस अवसर पर बड़े-बड़े राजनेता, संन्यासीगण, विद्वान् व प्रसिद्ध भजनोपदेशकों को आमंत्रित किया जाएगा।

आप सभी आर्यजनों से नम्र निवेदन है कि इस शताब्दी समारोह में उपस्थित होकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

निवेदक :-

विद्यार्य सभा, गुरुकुल झज्जर मो०नं० 9416055044

बीड़ी, शराब, सिगरेट पीना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है, इनसे सदैव दूर रहें।

एक महान् सन्त थे पूज्य आचार्य.... पृष्ठ दो का शेष....

कितलाना, स्वामी दिव्यानन्द हरद्वार, स्वामी देवव्रत व्यायामाचार्य, स्वामी रामवेश जीन्द, स्वामी चन्द्रवेश टिटौली, विरजानन्द दैवकरणि गुरुकुल झज्जर, डॉ० विश्वपाल दाधिया, यज्ञवीर शास्त्री किसरैंटी, डॉ० यज्ञवीर दहिया, सत्यवीर शास्त्री नूनामाजरा, डॉ० कृष्णदेव सारस्वत उड़ीसा, डॉ० विक्रम कुमार विवेकी उड़ीसा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती दिल्ली, डॉ० महावीर अग्रवाल, कुलपति उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय हरद्वार, स्वामी विवेकानन्द प्रभात आश्रम टीकरी, चन्द्रपाल शास्त्री पाकस्मा, डॉ० रणवीर शास्त्री आसन, डॉ० रणवीर शास्त्री उपनिदेशक हरियाणा राजकीय संग्रहालय चंडीगढ़, डॉ० राजकुमार उप शिक्षा निदेशक शिक्षा निदेशालय दिल्ली, डॉ० आनन्द कुमार गृहमंत्रालय भारत सरकार, आचार्य यशःपाल हुमायूंपुर, स्वामी ओमानन्द योगतीर्थ, स्वामी सत्यवेश कालवा, स्वामी यज्ञानन्द, स्वामी वेदरक्षानन्द कालवा, स्वामी धर्ममुनि बहादुरगढ़, आचार्य हरिदत्त गुरुकुल लाढौत, रणवीर शास्त्री हुमायूंपुर, प्रियव्रत हुमायूंपुर, रणधीर शास्त्री पौली, राजवीर कुण्डल, राजेन्द्र सुनारिया, श्री सत्यव्रत शास्त्री मकड़ौली कलां, सत्यव्रत झोझूं, ओमप्रकाश दाधिया, डॉ० धर्मपाल लाढौत, आनन्ददेव शास्त्री खेड़ीजट्ट, राजवीर शास्त्री देवली, जयदेव शास्त्री, ओमप्रकाश शास्त्री दाधिया, जगवीर शास्त्री खरमाण, आचार्य सत्यानन्द नैष्ठिक, आचार्य इन्द्रपाल नैष्ठिक, वेदपाल एडवोकेट जयपुर, आचार्य बलवीर रोहतक, डॉ० रवीन्द्र मैसूर, डॉ० कुशलदेव महाराष्ट्र, डॉ० वीरदेव नेपाल, डॉ० सुरेन्द्र कुमार बादली, डॉ० वेदपाल बरहाणा, डॉ० सोमदेव मुम्बई, डॉ० प्रकाशचन्द्र मुम्बई, प्रिं० धर्मव्रत शास्त्री हड़ौदा, प्रिं० दयामित्र शास्त्री पौली, प्रिं० रणधीर लीलोढ़, महेन्द्रकुमार पिलखुआ मेरठ, आचार्य विजयपाल गुरुकुल झज्जर आदि।

गुरुकुलीय शिक्षा :

व्याकरणाचार्य, निरुक्ताचार्य, उपनिषद्, दर्शनाचार्य, आयुर्वेदाचार्य एवं वेद-वेदांग।

आचार्य पद :

- महाविद्यालय, गुरुकुल झज्जर 1962 से 1971 तक
- गुरुकुल कालवा, सन् 1971 से 2000 तक

गुरुकुल कालवा में जाने के बाद आचार्य बलदेव जी ने जो विद्वान् तैयार किये, उनकी नामावली इस प्रकार है—

आर्ष-प्रचारकों का निर्माण :

योगर्षि स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकृष्ण जी हरिद्वार, आचार्य ज्ञानेश्वर जी रोजड़ (गुजरात), स्वामी विवेकानन्द सरस्वती (प्रभात आश्रम मेरठ), डॉ० सतीश प्रकाश (अमेरिका), डॉ० शोभानन्द (गयाना), डॉ० योगानन्द शास्त्री (पूर्व विधानसभा स्पीकर, दिल्ली), आचार्य आर्यनरेश (हिमाचल प्रदेश), आचार्य अखिलेश्वर, ब्र० राजसिंह आदि लगभग 145 युवा ब्रह्मचारियों व संन्यासियों को विशुद्ध आर्ष प्रणाली में शिक्षित कर समाज के लिए अनेक विद्वान् एवं उपदेशक तैयार किये।

विशेष रुचियां :

- आर्ष गुरुकुलीय शिक्षा का पठन-पाठन।
- राष्ट्रवादी चिन्तन एवं भारतीय संस्कृति को जनमानस तक पहुंचाना।
- वैदिक मूल्यों पर व्याख्यान।
- समाचार-पत्रों एवं पत्रिकाओं के लिए लेख लिखना।
- युवाओं को नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक करना।
- आर्यसमाज की वैदिक गतिविधियों का आयोजन।
- गो-नस्ल-सुधार व गोरक्षा हेतु सम्मेलन व शिविरों का आयोजन करना।
- वृक्षारोपण एवं यज्ञ चिकित्सा द्वारा प्रदूषणमुक्त समाज रचना।
- पुस्तक-लेखन करना।
- पाखण्ड के खिलाफ जनमानस को जागृत करना।

तथाकथित सन्त रामपालदास के पाखण्ड को निर्मूल करने में आचार्य बलदेव जी ने विशेष यत्न किया था, जिसके परिणाम स्वरूप उस पाखण्डी को करौंथा छोड़कर भागना पड़ा और जेल में जाना पड़ा।

वेदप्रचार एवं भारतीय संस्कृति हेतु निम्न देशों की यात्राएं

संगठन प्रवेश

- **संचालक,** आर्ष महाविद्यालय, गुरुकुल कालवा, जिला जीन्द
- **संस्थापक,** राष्ट्रीय गोशाला धड़ौली, जिला जीन्द
- **संस्थापक,** महर्षि दयानन्द ईटीटी रिसर्च सेंटर धड़ौली, जिला जीन्द
- **कुलपति,** श्रीमद्दयानन्द आर्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर
- **अध्यक्ष,** गोशाला संघ हरियाणा, रोहतक 1999 से 2011 तक सर्वसम्मति से निर्वाचित
- **अध्यक्ष,** आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक 2003 से 2010 तक सर्वसम्मति से निर्वाचित
- **अध्यक्ष,** सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली जुलाई 2012 से वर्तमान तक सर्वसम्मति से निर्वाचित
- **संरक्षक,** गोशाला संघ हरियाणा 2011 से वर्तमान तक
- **संरक्षक,** आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा 2010 से वर्तमान तक
- **संरक्षक,** गोरक्षा दल हरियाणा 2012 से वर्तमान तक
- **सदस्य,** भारतीय जीव-जन्तु कल्याण बोर्ड, चेन्नई
- **सदस्य,** हरियाणा गोसेवा आयोग, चंडीगढ़

विदेश यात्राएं

- दक्षिण अफ्रीका, मौरीशस।

लेखन व संपादन

- अष्टाध्यायी प्रवेश
- संस्कृत वाक्य प्रबोध
- महाभाष्य प्रथम आह्निक भाष्य
- अंग्रजी वाक्य प्रबोध

सम्मान एवं पुरस्कार :

- वेदमार्तण्ड पुरस्कार (माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट दिल्ली द्वारा)
- आर्यरत्न शिक्षा पुरस्कार (राव हरिश्चन्द्र आर्य, चैरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर)
- गोसंवर्धन पुरस्कार (राव हरिश्चन्द्र आर्य, चैरिटेबल ट्रस्ट, नागपुर)
- पं० लेखराम पुरस्कार (आर्यसमाज हिण्डौन सिटी, राजस्थान)
- आर्य गोशाला पुरस्कार (श्रीमती परोपकारिणी सभा, अजमेर)
- पशु-प्रेम पुरस्कार(पीपुल्स फॉर एनीमल्स, दिल्ली)
- पंडित युधिष्ठिर मीमांसक पुरस्कार (आर्यसमाज सान्ताक्रुज, मुम्बई)

प्रशंसा व अभिनन्दन पत्र :

- परममित्र मानव निर्माण न्यास, रोहतक
- गुरुकुल आमसेना उड़ीसा
- आर्य बाल भारती पब्लिक स्कूल, पानीपत
- आर्य केन्द्रीय सभा, सोनीपत
- आर्य केन्द्रीय सभा, गुड़गांव
- आर्य केन्द्रीय सभा, फरीदाबाद
- केन्द्रीय युवक परिषद्, दिल्ली

लक्ष्य एवं उद्देश्य :

- वैदिक संस्कृति, गोसंवर्धन एवं प्राचीन गौरव को प्रतिष्ठित तथा संवर्धित करना एवं मानवमात्र में वेदज्ञान को विकसित करना।

इस प्रकार आचार्य बलदेव जी के जीवन में अर्थशुचिता, निष्कलंक चरित्रता, परोपकारप्रियता, सम्मान की इच्छा से दूर रहना, सबके साथ मधुरता का व्यवहार तथा गम्भीरता आदि गुणों की प्रबलता स्पष्ट देखी जा सकती है।

किसी कवि ने कहा है—

या तो जननी सन्त जने या दाता या शूर। नहीं तो जननी बांझ रहे, काहे गंवावे नूर॥

ऐसे गुणी पुत्र को जन्म देकर इनकी पूज्या माता सचमुच स्वयं को धन्य कर गई। ऐसे गुणी आचार्य को खोकर हम सभी अनाथ होकर रह गये हैं। किन्तु ईश्वर की व्यवस्था के सम्मुख सभी पराधीन होते हैं, यही सोचकर मन को सन्तुष्ट करना पड़ता है।

हाईटैक रथ से किया था प्रचार

रोहतक। आर्यसमाज ने लोगों को सामाजिक बुराइयों से बचाने के लिए हाईटैक रथ चलाने का निर्णय लिया था। इसके लिए आचार्य बलदेव ने हाईटैक रथ से पूरे प्रदेश का भ्रमण करते हुए प्रचार किया था। इस रथ को फरवरी 2015 को हरी झंडी दिखाई थी। इसके अन्दर कम्प्यूटर, टीवी, शयन कक्ष और स्क्रीन थी। इसकी मदद से गांवों में तमाम बुराइयों को खत्म करने का संदेश दिया था। तब आचार्य जी ने कहा था कि यह रथ कभी रुकना नहीं चाहिए। एक साल के बाद भी हाईटैक रथ से गांवों में आर्यसमाज की ओर से संदेश दिया जा रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के स्वामित्व में मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक **मा० रामपाल आर्य** ने दुर्गेश्वरी प्रिंटर्स, माता मन्दिर चौक, पाड़ा मोहल्ला, रोहतक से मुद्रित एवं कार्यालय, सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक-124001 से प्रकाशित। पत्र में प्रकाशित लेखसामग्री से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
प्रत्येक विवाद के लिए न्यायक्षेत्र रोहतक न्यायालय होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जाएगी।